

---

---



डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011

आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899

प्रकाशन दिनांक 8 अप्रैल 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

# अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा

अंक-बारहवाँ

अप्रैल-2009

मासिक पत्रिका

5

## अपनी कहानी

(महाराज सावन सिंह जी के मुखारविंद से)

11

वक्त

29

## प्रेम-विरह

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन)

(कबीर साहब की बानी)

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

34

## धन्य अजायब

(दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया । फोन - 9950 556671  
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 9928 925304 उप सम्पादिका : नंदिनी  
सहयोग : रेणु सचदेवा, रोजी आनन्द , परमजीत सिंह

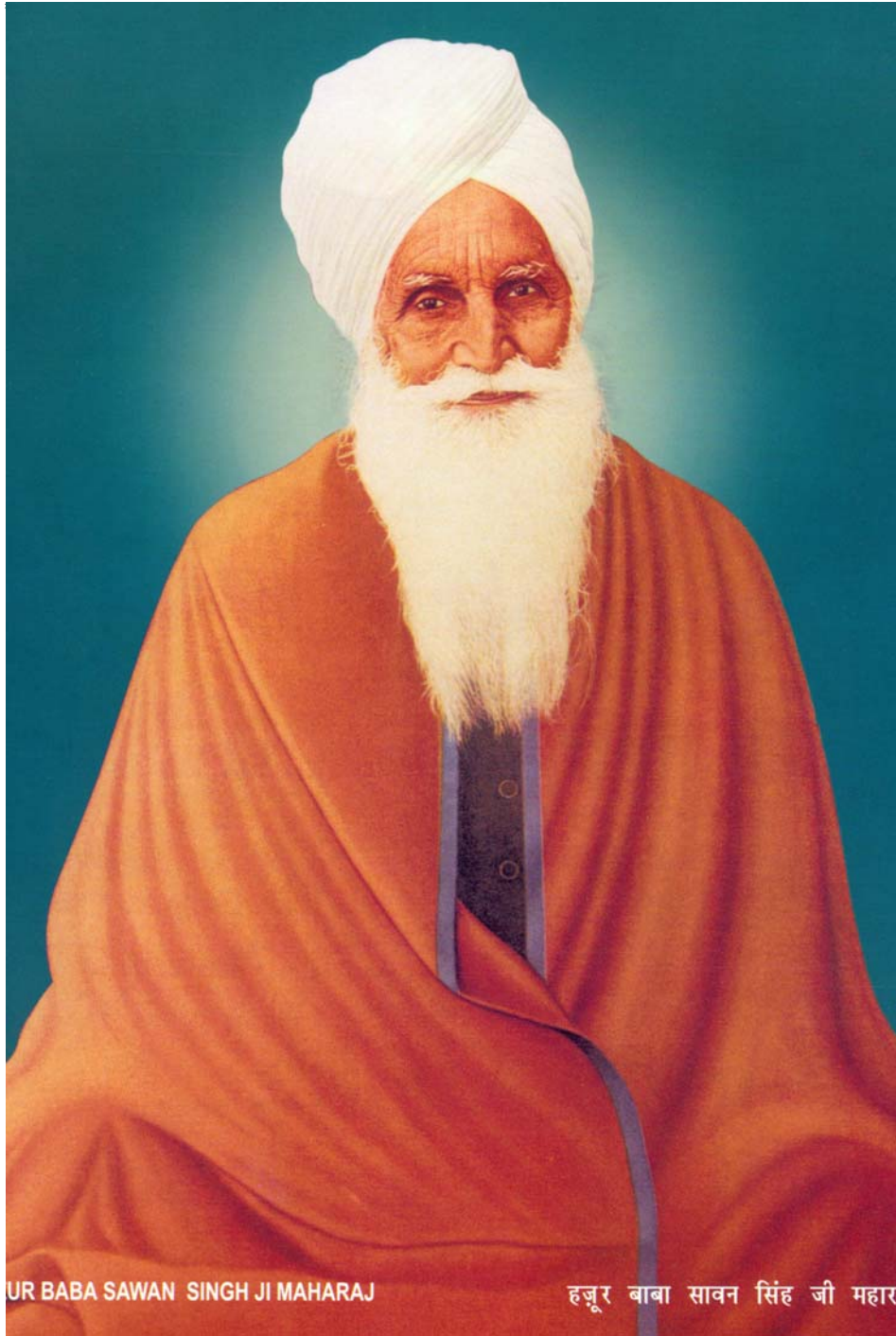
सन्त बानी आश्रम

85

16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in

Website : www.ajaibbani.org



UR BABA SAWAN SINGH JI MAHARAJ

हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

## अपनी कहानी

मेरा जन्म एक सिक्ख परिवार में हुआ। मैंने दस साल की उम्र में गुरु ग्रन्थ साहब को पढ़ना शुरू किया और सिक्ख धर्म के प्रचारकों से भी जुड़ा रहा। मैं जब भी गुरुबानी पढ़ता तो मेरे दिल में एक अजीब जज्बा पैदा होता। मैंने जब भी प्रचारकों से गुरुबानी के बारे में गंभीर प्रश्न पूछे तो वे मुझे तसल्लीबख्श जवाब नहीं दे सके।

बाबा कान्ह से मेरा मिलाप काफी समय तक रहा। आप आमतौर पर मस्ती की हालत में रहते थे। आपने मुझे कई अदभुत अनुभव भी करवाए। मैं जब आपसे पूछता क्या आप दया-मेहर करके मुझे 'नामदान' देंगे? तो आपका जवाब होता, "वह कोई और हस्ती है; मेरे पास तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है।" फिर मैं आपसे कहता, "आप बताएं कि वह हस्ती कौन है? ताकि मैं उस हस्ती से मिल सकूँ।" आप कहते, "जब समय आएगा वह हस्ती खुद ही तुम्हें ढूँढ लेगी।"

मैं कोहमरी की पहाड़ियों पर एस.डी.ओ. के पद पर काम करता था, मेरा मकान एक धर्मशाला के पास था। उस धर्मशाला में अमरनाथ की यात्रा को जाने वाले साधु-महात्मा और दूसरे लोग ठहरा करते थे। मुझे उन लोगों से बातचीत करने और धार्मिक व परमार्थ के विषयों पर आदान-प्रदान करने का मौका मिलता था।

उन दिनों बाबा जयमल सिंह जी कोहमरी आए और एक गुरुद्वारे में ठहरे। आपने गुरु ग्रन्थ साहब की बानी पर सतसंग किया। वहाँ के लोगों को आपकी व्याख्या बहुत अच्छी प्रतीत हुई जिसका मुझे भी पता चला। मुझे किसी ने बताया कि एक पहुँचे हुए महात्मा आए हैं अगर दर्शन करना चाहते हैं तो चलें?

बातचीत के दौरान उसने मुझे बताया कि वह महात्मा सिर पर बाजा रखते हैं। मैंने उससे कहा कि मैं एक इंजीनियर हूँ और मैंने आज तक ऐसा बाजा नहीं देखा जो सिर पर रखा जा सकता हो।

मैं चौथे दिन बाबा जयमल सिंह जी का सतसंग सुनने के लिए गया। बाबा जी उस समय जपजी साहब की बानी की व्याख्या कर रहे थे। मैंने बाबा जी से इतने प्रश्न पूछे कि सतसंग में बैठे सब लोग परेशान हो गए। वहाँ स्वामी जी महाराज की बानी का संग्रह 'सारवचन' भी रखा हुआ था। मैंने राधास्वामी शब्द पर आपत्ति प्रकट की। बाबा जयमल सिंह जी ने 'सारवचन' की पुस्तक की यह तुक पढ़कर सुनाई:

*राधा आदि सुरत का नाम स्वामी शब्द बसे निज धाम।*

बाबा जयमल सिंह जी 'सुरत-शब्द' के बारे में समझाने लगे लेकिन मैंने तो वेदान्त पढ़ रखा था। मैंने बाबा जी की तालीम को पूरी तरह समझने के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली। बाबा जी ने मुझे कबीर साहब की बानी 'अनुराग सागर' पढ़ने का आदेश दिया। मैंने उसी वक्त बंबई से 'अनुराग सागर' की आठ प्रतियां मंगवा ली और दूसरे मित्रों को भी 'अनुराग सागर' पढ़ने के लिए दिया ताकि मैं उनकी राय भी जान सकूँ।

बाबा जी से थोड़े दिन और बातचीत हुई जिससे मेरी पूरी तसल्ली हो गई। मैंने 15 अक्टूबर 1894 को बाबा जी से 'नामदान' ले लिया। काल ने सतपुरुष से तीन वर लिए हुए हैं:

1. सन्त-महात्मा जीवों को सतसंग सुनाकर सन्तमत में लाएं। रिद्धियाँ-सिद्धियाँ न दिखाएं।
2. जीव को अपने पिछले जन्म के बारे में कुछ भी याद न हो।
3. आत्मा को जिस योनि में जन्म दिया जाए यह उसी में संतुष्ट रहे।

अगर सन्त-महात्मा लोगों को रिद्धियाँ-सिद्धियाँ दिखाकर सन्तमत में लाएंगे तो सारी दुनिया ही उनके पीछे लग जाएगी। महात्मा के लिए

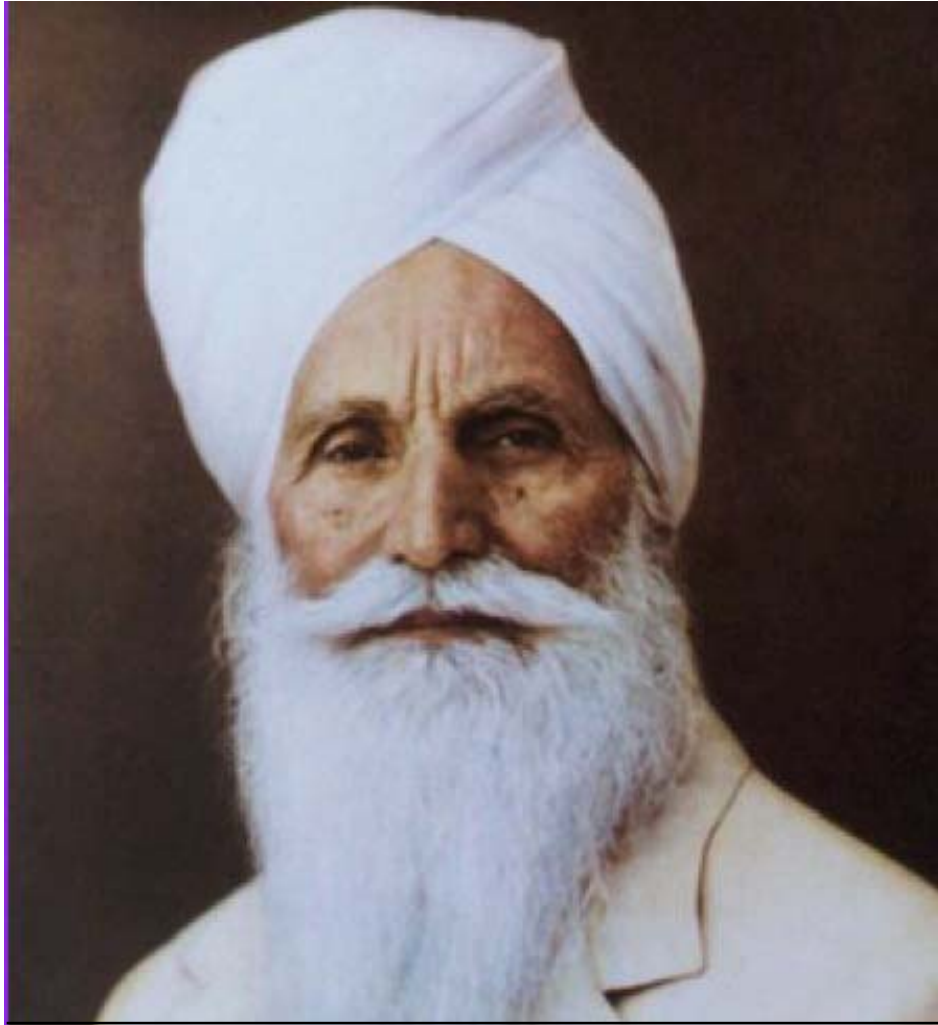
किसी मरे हुए आदमी को जीवित कर देना, अंधे को आँख दे देना, लंगड़े को टाँग दे देना मुश्किल नहीं लेकिन यह सन्तमत का तरीका नहीं। जहाँ सन्त रहते हैं चाहे वे कोई करामात न दिखाएँ फिर भी वहाँ असाधारण बातें होती रहती है।

मैंने सतसंग में कई बार **अपनी कहानी** सुनाई है। मेरी आदत थी कि मैं घोड़े की अय्याल पकड़कर चलते घोड़े पर कूदकर चढ़ जाता था। मेरे नौकर ने मुझे बताए बिना घोड़े की अय्याल काट दी। मैंने देखा नहीं और जैसे ही घोड़े पर चढ़ने के लिए अय्याल को पकड़ने की कोशिश की तो मेरा हाथ फिसल गया, मैं नीचे गिर गया और मेरी टाँग टूट गई। टाँग टूट जाने से मुझे बहुत तकलीफ हुई लेकिन ज्यादा तकलीफ वाली यह बात थी कि मैं टट्टी-पेशाब भी नहीं कर सकता था।

डॉक्टरों ने यहाँ तक सोच लिया था शायद मैं बचूंगा ही नहीं! मेरी इस तकलीफ के बारे में सुनकर एक मुसलमान ओवरसियर जो मेरे ही जिले का था मेरे पास आकर कहने लगा, “मैं आपका अपना हूँ आप मुझे बताएं कि मैं आपकी क्या मदद करूँ?” मैंने उससे कहा कि मेरे बच्चे यहाँ से आठ मील की दूरी पर स्कूल में पढ़ते हैं और वहीं रहते हैं। मैं नहीं चाहता कि उन्हें इस बात का पता लगे।

मैं चाहता हूँ कि इस घटना के बारे में आप एक तार मेरे गुरु बाबा जयमल सिंह जी को दे दें। उसने उसी समय तार दे दी। बाबा जयमल सिंह जी को तार रात के करीब आठ बजे मिली। आपके मुँह से निकला, “अगर सतगुरु उसे ले जाना चाहते हैं तो ले जाएँ क्योंकि उसे ‘नाम’ तो मिला हुआ है।” मेरी गुरु बहन बीबी रूक्को ने बाबा जी से मेरी सिफारिश की। बाबा जी उसी समय भजन पर बैठ गए।

आपने सुबह के तीन बजे के करीब बीबी रूक्को को बुलाया तो बीबी रूक्को ने आपसे पूछा, “क्या अब खाना ले आऊँ?” क्योंकि बाबा जी ने रात को खाना नहीं खाया था। बाबा जी ने बीबी रूक्को से कहा कि तुमने भाई सावन सिंह के बारे में पूछा था। अब उन्हें इत्तला कर दो कि



उन्होंने नहीं जाना लेकिन कर्म बहुत जबरदस्त थे। कर्मानुसार उन्होंने पाँच वर्ष कष्ट भोगना था लेकिन अब उन कर्मों का भुगतान पाँच महीनों में ही पूरा करवा देंगे।

अभी हम उनके पास नहीं जाएंगे जब वह अस्पताल से आएंगे तब हम उनके पास जाएंगे। जब मुझे बाबा जी की तार मिली तो उसके फौरन बाद ही मैं टट्टी-पेशाब जाने लगा। सन्त-महात्मा हम लोगों पर बहुत रहम करते हैं लेकिन वे उसका जिक्र नहीं करते।

मेरा रूपये-पैसों का बहुत नुकसान भी हुआ। मेरा सब डिविजनल एलाऊंस, घोड़ा रखने का एलाऊंस और आधी तनखाह जाती रही। मेरा चीफ इंजीनियर मेरे ऊपर बहुत मेहरबान था। उसने मुझसे कहा, “अगर आप बग्गी में बैठकर भी दफ्तर आ जाएं तो आपको ड्यूटी पर मान लिया जाएगा।”

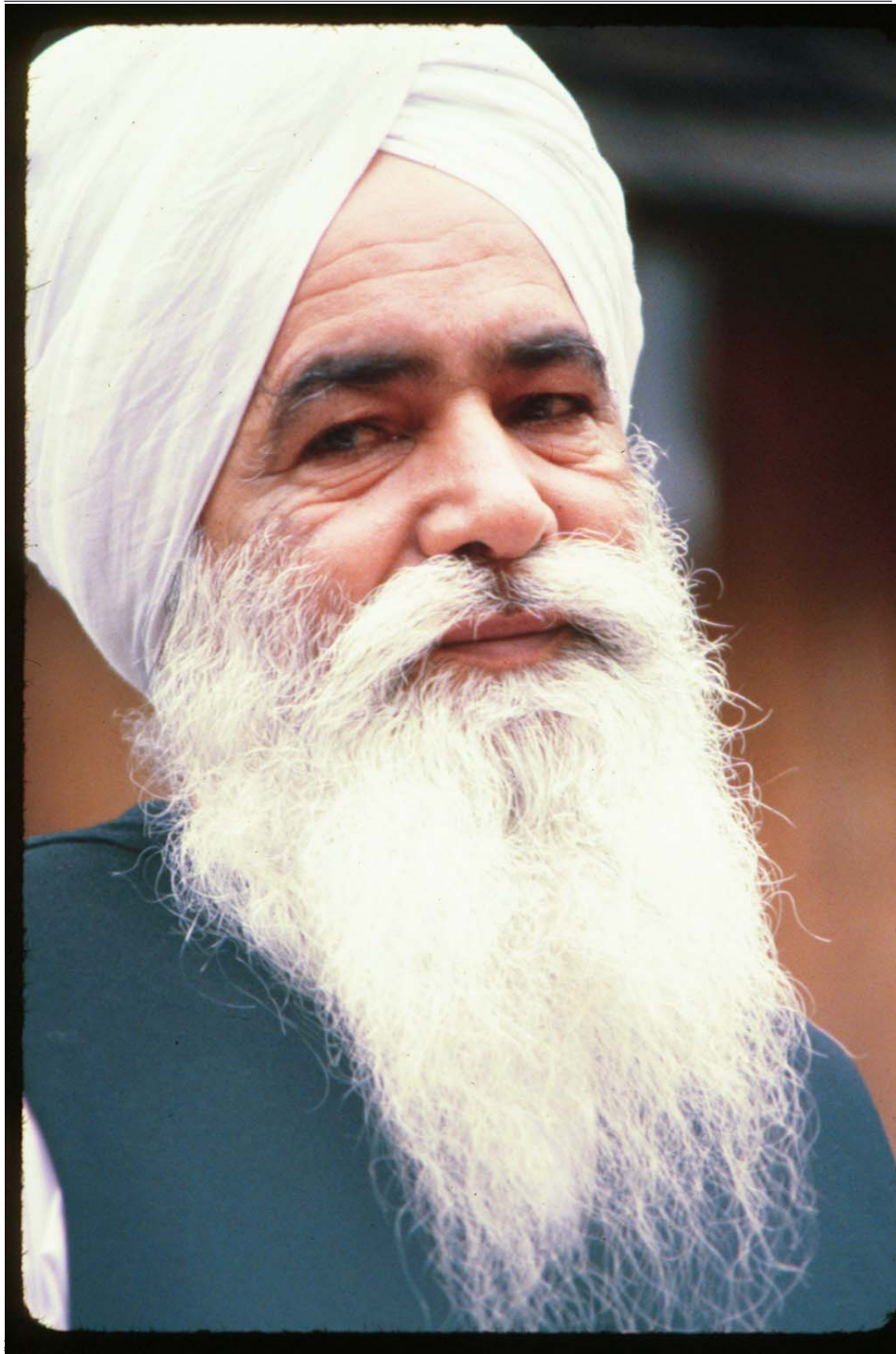
मुझे डर था कि मेरी टाँग अभी कमजोर है कहीं मैं गिर न जाऊं! फिर भी मेरे चीफ इंजीनियर ने मुझे एक महीने की छुट्टी दे दी। मैं नहीं जानता था कि मैं एक महीने के बाद भी काम पर जाने के लायक हो जाऊंगा। इसी दौरान बाबा जी मुझसे मिलने कोहमरी आए और उन्होंने कहा, “अभी तुम एक महीना काम पर नहीं जा सकोगे।”

एक महीने बाद बाबा जी का पत्र आया जिसमें उन्होंने लिखा, “हम लोग दुनिया में अपना काम करने नहीं आए। हम स्वामी जी महाराज के हुक्म से आए हैं अगर उनकी मौज होगी तो वे हमसे काम लेंगे।” मुझे विश्वास था अगर गुरु चाहे तो अपना काम पत्थरों से भी करवा सकता है अगर बहुत ऊँचे भाग्य हों तो ही हमारा मिलाप किसी पूर्ण सन्त-महात्मा से होता है।

बाबा कान्ह परमार्थ में रंगा हुआ था। वह दूर-नजदीक से रोड़े-पत्थर इकट्ठे करके ढेर लगाया करता था। लोग उसे कमला कान्ह कहा करते थे। जब उससे पूछा जाता कि आप यह क्या कर रहे हैं? तो वह कहता, “एक दिन यह बहुत बड़ी जगह बन जाएगी। यहाँ बहुत शानदार मकान बनेंगे। यह जगह शहरों की तरह आबाद हो जाएगी।” उस समय यह जगह बंजर और रेतीली थी।

जब बाबा जयमल सिंह जी ने यहां निवास किया तब यहां एक छोटी सी झोपड़ी थी। मैं जब उस झोपड़ी में खड़ा होता तो अपना हाथ छत को लगा लेता था। मैं कई बार बाबा जी से बच्चों वाले सवाल पूछा करता था लेकिन आप कभी नाराज नहीं होते थे और मुझे हमेशा प्यार से जवाब देते थे।





अप्रैल 2009

10

अजायब बानी

## वक्त

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

हर रोज की तरह आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। सभी सन्त-महात्माओं का एक ही उपदेश होता है, वे सब आपस में सहेलियाँ होती हैं; सब सन्त एक ही मण्डल से आते हैं। ये हमेशा ही मालिक के दरबार में रहते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*सन्त-सन्त को दो कर जानी, सो जन जाण नरक की खानी।*

जो भक्ति करता है वह मालिक रूप हो जाता है। हम पतासे को पानी में डालें तो पतासा पानी रूप हो जाता है अगर हम दूध में मिश्री डालें तो उसका स्वाद ही बदलता है रंग नहीं बदलता। कबीर साहब, गुरु नानक देव जी, बाबा जयमल सिंह जी, महाराज सावन सिंह जी को अलग रूप समझना हमारी भूल है। ये सब एक ही देश से आते हैं इनका एक ही संदेश होता है। वे जीव भाग्यशाली थे जिन्हें इन सन्तों के चरणों में बैठने का मौका मिला।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे बेशक लुकमान अच्छे हकीम थे मुर्दे को भी जिन्दा कर सकते थे अगर आज हमारा लड़का बीमार हो जाए और हम हठ करके बैठ जाएं कि हमने तो लुकमान हकीम से ही इलाज करवाना है चाहे हम उन पर कितनी भी श्रद्धा रख लें लेकिन हमारा बच्चा राजी नहीं हो सकता क्योंकि अब उनका वक्त नहीं। वह जिस समय में आए तब जो लोग उनके संपर्क में आए उन्होंने उनसे तंदरुस्ती प्राप्त कर ली। हमें वक्त के हकीम के पास जाना पड़ेगा तभी हम तंदरुस्ती हासिल कर सकते हैं।

अगर किसी टीचर को स्कूल छोड़े हुए पचास साल हो गए हों और हम चाहें कि हमने अपने बच्चे को उसी से शिक्षा दिलवानी है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता, वक्त के टीचर की जरूरत पड़ती है।

राजा विक्रमादित्य बहुत अच्छा धर्मात्मा हुआ है। उसने प्रजा को बहुत सुख दिया अगर आज कोई लड़की हठ करके बैठ जाए कि मैंने तो राजा विक्रमादित्य से शादी करवाकर ही औलाद पैदा करनी है! बेशक वह लड़की सारी उम्र बैठी रहे ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि विक्रमादित्य अब जीवित नहीं है। **वक्त** के पति की जरूरत होती है।

महात्मा कहते हैं कि समय-समय पर उच्चकोटि के महात्मा आए अगर आज हम उनकी लेखनियों को पढ़ना शुरू कर दें फिर भी कामयाब नहीं हो सकते। **वक्त** का महात्मा ही हमारी सुरत को 'शब्द' के साथ जोड़ सकता है अगर हम यह कहें कि पहले जो सन्त-सतगुरु हुए हैं उनके बाद सन्त-सतगुरु हो ही नहीं सकते तो यह हमारी भूल है।

जो बच्चा सतयुग में पैदा हुआ था उसे भी परवरिश के लिए माता के दूध की जरूरत थी जितनी की द्वापर और त्रेता में पैदा हुए बच्चों को थी। आज हम कलयुग में बैठे हैं। आज के बच्चों को भी परवरिश के लिए माता के दूध की उतनी ही जरूरत है।

प्यारेयो! ऐसा नहीं कि आज महात्मा की जरूरत नहीं। आज भी महात्मा की, नाम-शब्द प्राप्त करने की जरूरत है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

*कहो नानक प्रभ एह जनाई, बिन गुरु मुक्त न पाईए भाई।*

गुरु के बिना मुक्ति का सवाल ही पैदा नहीं होता। मुँह में रोटी डालते हैं पता नहीं कि गले से नीचे किस तरफ चली जाती है, पानी पीते हैं पता नहीं किस तरफ चला जाता है। महात्मा को डाक्टर की तरह शरीर की एक-एक नाड़ी का ज्ञान होता है कि कान और मुँह के सुराख नीचे जाकर एक हो जाते हैं।

महात्माओं ने पूरे शरीर का अध्ययन किया होता है। वे यह भी जानते हैं कि परमात्मा हमारे शरीर के कौन-से हिस्से में बैठा है अगर परमात्मा की खोज करनी है तो किस हिस्से में जाकर करनी है?

सब महात्माओं ने सन्त-सतगुरु के गुण गाए हैं। गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, “वेद कतेब से मुझे वह चीज नहीं मिली जो मुझे गुरु के पास जाकर प्राप्त हुई।”

कबीर साहब हमें प्यार से समझाते हैं कि हम जिस संसार को इन आँखों से देख रहे हैं, ये सब मूरतें काठ की कोठी हैं। हर शरीर काठ की कोठी है इसको दसों दिशाओं से आग लगी हुई है लेकिन हम नहीं जानते कि इस आग को किस तरह बुझाना है?

हमें पता है कि बाहर कहीं आग लगती है तो फायर ब्रिगेड वाले आग बुझाने का इन्तजाम करते हैं। जब लोग उन्हें आग लगने की खबर करते हैं तो वे फौरन आ जाते हैं। क्या हमारे पास भी ऐसा कोई साधन है जिसे हम आवाज़ लगा सकें; जो हमारी आग बुझा सके? आँखों को रूप देखने की आग लगी हुई है, यह सुंदर रूपों पर भागती हैं। नाक को वासना लेने की आग लगी हुई है। कानों को राग-रंग सुनने की आग लगी हुई है; ये हमेशा राग रंग पर भागते हैं।

आजकल काल ने ऐसी रचना रची हुई है कि हम सारा दिन टेलिविजन देखने में लगे हुए हैं। क्या हमारा ख्याल प्रभु भक्ति की तरफ या किसी अच्छी तरफ जाएगा? रसना को अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट खानों की आग लगी हुई है। त्वचा को स्पर्श करने की आग लगी हुई है। कौन है जो हमारी इस आग को बुझा दे? वह गुरु है; परमात्मा है अगर हम उसे याद करेंगे तो वह जरूर आएगा।

जिस तरह फायर ब्रिगेड वालों के पास दूर तक पानी फेंकने के लिए लंबी पाईप होती है उसी तरह हमारे गुरुदेव के पास ‘नाम’ का फव्वारा है अगर हम गुरु को पुकारेंगे तो वह हमारी मदद जरूर करेगा। ‘नाम’ की कमाई करके जो अपने अंदर ‘शब्द’ को प्रकट कर लेता है उसके अंदर ऐसी आग के झोंके अपने आप ही बुझ जाते हैं। हमारा ख्याल बाहर से हटकर अंदर आ जाता है। कबीर साहब की बानी बड़ी प्यार भरी है, गौर से सुनें:

## कबीर कोठी काठ की दहदिसि लागी आगि। पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि॥

कबीर साहब कहते हैं, “हमारा शरीर एक काठ की कोठी है। इसमें दसों दिशाओं से आग लगी हुई है। सन्त-सतगुरु प्रेमियों को जो रास्ता बताते हैं वे उस रास्ते पर चलकर बच जाते हैं। महात्मा पढ़-पढ़ाई की निन्दा नहीं करते।”

मैं आर्मी में वायरलेस ऑपरेटर था। मेरी ट्रांसफर रियासत नाभा में हो गई। उस रियासत के राजा ने यज्ञ करवाया। जिसमें राजा ने बहुत से पंडित बुलवाए। उस सम्मेलन का नाम वेदांत सम्मेलन रखा गया। वहाँ सिरकियों का एक नगर बसाया गया। भीड़-भाड़ में लोग सफाई की तरफ कम ही ध्यान देते हैं। लोगों को बीड़ी पीने की आम आदत होती है। किसी ने बीड़ी पीकर फेंकी तो उससे वहाँ आग लग गई। जिन लोगों ने सोच-विचार नहीं किया वे फौरन आग देखकर भाग गए। पंडित बैठकर विचार ही करते रहे कि यह आग क्यों लगी, किसने लगाई, कोई बुझाने वाला आएगा या नहीं? लेकिन उनके दिमाग में यह बात नहीं आई जैसे और लोग भाग गए हैं हम भी भागकर बच जाएं? वे पंडित जलकर वहीं खत्म हो गए।

कबीर साहब कहते हैं, “प्रेमी तो ‘शब्द-नाम’ की कमाई करके तर जाते हैं। पढ़े-लिखे बाल की खाल निकालने में ही लगे रहते हैं। वे सोचते रहते हैं कि इस ग्रंथ में यह लिखा है और उस ग्रंथ में वह लिखा है।” *जेता पढ़या तेता कढ़या।*

## कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ। बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ॥

कबीर साहब उस पंडित को उपदेश करते हुए कहते हैं, “देख प्यारेया! तू दिल से यह संशय निकाल दे। यह जो तेरे वेद-शास्त्र हैं इन्हें पानी में फेंक दे। वेद-शास्त्रों में तो धर्म-कर्म के बारे में ही लिखा है जो

वेद-शास्त्रों की बात को नहीं समझता वह झूठा है।” आप अपनी बानी में यह भी लिखते हैं:

*वेद कतेब कहो मत झूठे झूठा जो न विचारे।*

यह जरूर लिखा है जब माता-पिता मर जाएं तो उनके नाम पर बर्तन, बिस्तर दान दें और छाया के लिए छाता भी दें। हम सब ऐसा करते भी हैं। क्या यह धोखा नहीं? जीवित रहते हुए माता-पिता के तो पेट सड़ते हैं उन्हें कोई रोटी नहीं देता लेकिन मरे हुए माता-पिता की खातिर हम हलवा बनाकर दान करते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

*जीवित पितृ न माने कोउ मुए श्राद्ध कराही।  
पितृ भी विपरे को-को पावे कोआ कूकर खाही।*

आप यह संशा छोड़ दें कि आगे जाकर मिलेगा। ‘शब्द-नाम’ की कमाई करें, अंदर जाकर सच्चाई को देखें। यह जो कुछ भी करना है जीते-जी करना है।

*हत्थी खाईए हत्थी देईए हत्थी बनिए पल्ले।  
ऐसा कोई न जन्मया जो मोया पीछे घल्ले।*

जब परम पिता कृपाल जी ने चोला छोड़ा उस वक्त मैं गाँव किल्लेयांवाली में जाकर रहा वहाँ मुझे कोई नहीं जानता था। दुनिया मुझे पार्टी में घसीटती थी। दुनिया को जायदादें ही प्यारी होती हैं क्योंकि आमतौर पर लोग जायदादों के साथ ही बंधे होते हैं लेकिन मैं इस हक़ में नहीं था। वहाँ एक बुजुर्ग गुजर गया। वहाँ के लोगों ने मुझसे कहा कि क्या आप पाठ करेंगे? मैंने कहा हाँ! मैं पाठ जरूर करूंगा लेकिन प्रसाद आप लोग करना क्योंकि मेरी आँख खराब है। उस गाँव के लोग मुझे सी.आई.डी का अफसर समझते थे कि यह हमारे गाँव की खबरे लेने के लिए आया है।

उन लोगों ने मुझे मीठा खिलाना शुरू किया। मैं मीठा खाने का आदी नहीं था। वे लोग कहने लगे कि हमारा बूढ़ा तो मीठा खाता था।

मैंने कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है कि मेरे मुँह में मीठा डालने से उसे मीठा मिल जाएगा? फिर कल आप लोग कहेंगे कि हमारा बूढ़ा यह भी खाता था।” वे हँसकर कहने लगे, “हमारा बूढ़ा अफीम भी खाता था और नसवार भी लेता था।” मैंने कहा, “शुक्र है कि मैं बच गया नहीं तो आपने ये चीज़ें भी मेरे आगे रख देनी थी।”

**कबीर संत न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत।  
मलिआगर भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत।।**

कबीर साहब सन्तों की महिमा गाते हैं कि सन्तों के पास चाहे कितने भी बुरे आदमी क्यों न आए वे उन्हें भी ठंडक पहुँचाते हैं, उन पर ‘नाम’ के छींटे मारते हैं। ऐसा नहीं कि वे बुरों के साथ बुरे हो जाते हैं।

मेरे गुरुदेव कृपाल के समय का वाक्या है कि उनके पास एक औरत ‘नाम’ लेने के लिए आई जिसके अंदर बहुत बुराइयाँ थी और एक आदमी भी आया जो अपने आपको काफी अच्छा समझता था। मेरे पिछले आश्रम में महाराज ने उस आदमी को ‘नाम’ देने से इंकार कर दिया; उससे कहा कि सतसंग सुनो और उस औरत को ‘नाम’ दे दिया।

वहाँ काफी लोगों ने चर्चा की कि हमने तो सुना था कि यह महात्मा बहुत अच्छा है। इस महात्मा ने उस आदमी में क्या कसूर देखा और उस औरत में क्या अच्छाई देखी? खैर मेरे साथ बातचीत हुई तो मैंने कहा कि यह तो वक्त ही बताएगा कि यह आदमी क्या करेगा और वह औरत क्या करेगी? बहुत से आदमी उस औरत को जानते हैं। वह औरत अभी जिन्दा है। ‘नाम’ लेने के बाद वह एक शरीफ महात्मा की जिंदगी जीने लग गई है। मैंने उस औरत के घर में सतसंग भी दिया था। वह मर्द भी अभी जिन्दा है, उसे ‘नाम’ नहीं मिला लेकिन उसने हर प्रकार के ऐब धारण किए हुए हैं।

सन्त दिलों की जानते हैं कि किसे ‘नाम’ देना है और किसके अंदर क्या रखा हुआ है? महात्मा पापी-पुन्नी का ख्याल नहीं करते।

उन्हें जीव के अनेकों जन्मों का ज्ञान होता है। उनके पास जो आता है वह उसे सही रास्ता बताते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “महात्मा अंजान बनकर अपनी जिंदगी व्यतीत करते हैं। वे अपनी बड़ाई नहीं करते, सेवक के मुँह से सुनकर ही खुश होते हैं। जैसे साँप चंदन के वृक्ष को लिपटे रहते हैं फिर भी चंदन का वृक्ष अपनी शीतलता नहीं छोड़ता। साँप के अंदर जहर होता है चंदन का वृक्ष साँप को भी शीतलता देता है।”

**कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु।  
जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि॥**

कबीर साहब कहते हैं, “जब गुरु ने ‘नाम’ का उपदेश दिया, नाम की कमाई की तो मेरे मन को शान्ति आ गई। जिस काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की अग्नि से सारी दुनिया सड़ रही है वह हमारे लिए अमृत समान है।”

**कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ।  
कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ॥**

गुरु नानकदेव जी के पास आकर कुछ आदमियों ने सवाल किया कि दुनिया को पैदा हुए कितना समय हो गया? आपने कहा:

*तिथि वार न जोगी जाने ऋतु माह न कोई।  
जां कर्ता सृष्टि को साजे आपे जाने सोई।  
वेद न पाई पंडित जे लिखया होय पुराण।*

आप कहते हैं कि अगर पंडितों को ज्ञान होता तो वे पुराणों में दर्ज कर जाते, मौलवियों को पता होता तो वे कुरान में लिख जाते, योगियों को पता होता तो वे अपने ग्रन्थों में लिख जाते कि सृष्टि कब पैदा हुई? जिसने इस सृष्टि को पैदा किया है वही जानता है कि यह कब पैदा हुई और इसने कब लय होना है। यह सब कुछ उसके हाथ में है।

जो 'नाम' में समाकर परमात्मा रूप हो जाते हैं, ऐसे मस्ताने भोले-भाले बन जाते हैं। वे दुनिया में आकर ऐसी भविष्यवाणियां नहीं करते कि यह दुनिया कब बनी है, कब खत्म होगी? या कब भुचाल आना है किस **वक्त** क्या होना है? वे ऐसा नहीं कहते क्योंकि यह तो गुड़ियों का खेल होता है।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के चरणों में बैठने का ज्यादा से ज्यादा मौका मिला है। यह आपकी ही दया थी कि आपने मुझे अपनी नज़दीकी का मौका दिया। मैं देखता रहा हूँ कि सतगुरु अपने शिष्य के लिए क्या कुछ करता है। वहाँ आकर लोग कहते थे कि आपने हमारा यह काम किया वह काम किया। कोई कहता कि हम ट्रेन से आ रहे थे हमारा पैर फिसल गया ट्रेन चल पड़ी लेकिन हमें कोई चोट नहीं लगी हम बच गए। इस तरह के अनेकों ही सबूत हैं कि किस तरह आपने पाकिस्तान में बच्चों की रक्षा की। माता-पिता के कंधों पर बैठे हुए बच्चे कहते थे, “यह वही बूढ़ा है जो रात को काफिले की रखवाली करता था।” ये सब मेरी आँखों देखी कहानियाँ हैं। आप यही कहते कि यह सब बाबा जयमल सिंह जी की दया है, बाबा जी ही मेहर कर रहे हैं।

मैंने जब अपने गुरुदेव महाराज कृपाल को अपनी हालत बताई कि पहले आप किस तरह एक साल तक मेरे अंदर स्वामी जी के रूप में आते थे उस समय आपके बाल कटे हुए थे फिर आप अपने असली रूप में आने लगे। आपने कहा, “यह सब हुजूर सावन की दया है।” आप सोचकर देखें! सब कुछ करके भी यह नहीं कहते कि हमने किया है।

एक बार मेरे पास आपकी एडवांस पार्टी आई। उन्होंने ड्योढ़ी में खड़े होकर इस तरह शब्द बोले जैसे पंडित आरती बोलते हैं। जिसमें वे बता रहे थे कि आज महाराज जी आएंगे। उस **वक्त** मुझे बहुत जोर से बुखार चढ़ा हुआ था। मैं बाहर नहीं गया तो वे लोग अंदर आ गए और मेरी हालत देखकर काफी परेशान हुए। उन्होंने गंगानगर पहुँचकर परम-पिता कृपाल को मेरे बुखार के बारे में तार दे दी।

जब मैं दूसरे दिन गंगानगर गया तो मुझे पता चला कि प्रेमियों ने आपको मेरे बुखार के बारे में तार दे दी है। महाराज जी ने अगले दिन गंगानगर आना था वे नहीं आए। मेरा बुखार बिना किसी दवाई के उतर गया और उन्हें चढ़ गया।

आप जब अगले दिन गंगानगर आए तो आपका मुँह पीला पड़ा हुआ था। पता नहीं आपने इस गरीब की कितनी तकलीफ सही! एक प्रेमी जो आपके काफी करीब था उसने कहा, “मैंने ही आपको इनकी बीमारी की तार दी थी।” महाराज जी ने कहा, “हाँ मुझे पता है कि तू ओलिया है।” महात्मा दूसरों को बताते वक्त भी टोक देते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “अगर आप भजन करते हैं और परमात्मा आपके ऊपर मेहर करता है तो आप अपने में से धुँआ तक न निकलने दें।”

कबीर साहब कहते हैं कि परमात्मा की दया को उसके प्यारे बच्चे ही समझ सकते हैं लेकिन वे दीवाने हो जाते हैं मस्त हो जाते हैं। वे आकर सबको यही भेद देते हैं कि प्यारेयो! अगर आप ऐसे करेंगे तो आप परमात्मा से मिल सकते हैं उसकी दया प्राप्त कर सकते हैं।

**कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गई सब भूलि।  
ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि॥**

कबीर साहब कहते हैं, “हमारे अच्छे भाग्य थे कि हमारे अंदर परमात्मा का डर पैदा हुआ। मनुष्य जन्म को सुधारने का चाव पैदा हुआ। भाव और भय दोनों का बानी में जिक्र आता है, ये दोनों एक साथ चलते हैं। जिसके अंदर डर है उसके अंदर ही प्यार है, जिसके अंदर परमात्मा का प्यार है उसके अंदर डर भी है।”

अगर कोई मामूली रिश्तेदार भी हमारे घर आता है तो हम कोई बुराई वाला काम नहीं करते अगर हम परमात्मा के बारे में सोचेंगे तो क्या हम बुराई करेंगे? लेकिन हमें परमात्मा का डर नहीं।

हमारी भी यही हालत है जैसे ओले जमीन पर पड़ते हैं, जब उन्हें सूर्य की तपिश मिलती है तो वे पानी रूप होकर समुद्र में जाकर मिल जाते हैं। इसी तरह जब हमारी आत्मा को गुरु-रूप किरणों की तपिश मिली तो यह भी बुझारात बनकर 'शब्द-नाम' में जाकर समा जाती है।

**कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह।  
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह॥**

काल भगवान ने आग, हवा, पानी, मिट्टी और आकाश पाँच तत्वों की रचना रची है। जीव खेलता कूदता है आखिर मिट्टी में मिलकर मिट्टी में ही समा जाता है।

*पाँच तत्त का पुतला मानस रखया नाओं।*

**कबीर सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह।  
गुर गोविंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह॥**

कबीर साहब कहते हैं कि हमारा जन्म दिन को या रात को होता है। रात में पैदा होने वाले चन्द्रवंशी और दिन में पैदा होने वाले सूर्यवंशी कहलाते हैं। इन दोनों दीपकों के जलते हुए ही हमारी देह पैदा होती है अगर इस देह को पाकर हमें गुरु या 'नाम' नहीं मिला तो हम मिट्टी में से आते हैं और मिट्टी में ही चले जाते हैं। हमें परमात्मा ने जो इंसानी जामा दिया है हम उस जामे को बेकार ही खोकर चले जाते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

*जिनि ऐसा हरि नाम ना चेतया से काहे जग आए।  
ऐह मानस जन्म दुर्लभ है नाम बिन बिरथा सब जाए।  
हुण वत हरि नाम न बीजया अग्गे भुखा क्या खाए।  
मनमुखा नू फेर जन्म है नानक हरि भाए।*

**जह अनभउ तह भै नहीं जह भउ तह हरि नाहि।  
कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि॥**

कबीर साहब सन्त मंडली को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि जब तक हमारा अनुभव नहीं खुलता तब तक यम का डर लगा रहेगा। जब तक हमारे दिल में यम का डर है तब तक परमात्मा कैसे प्रकट होगा? परमात्मा वहीं प्रकट होगा जहाँ अनुभव खुल जाएगा।

कमाई करना कोई और चीज़ है, प्यार करना कोई और चीज़ है लेकिन अनुभव खुलना कोई और चीज़ है। अनुभव उसे कहते हैं जैसे हम यहाँ बैठे साफ देख रहे हैं कि यह आदमी काला है या गौरा है। यह औरत है या मर्द है। प्यारेयो! इसी तरह अंदर जाकर हम साफ देख लेते हैं, अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। जहाँ अनुभव खुल जाता है वहाँ डर खत्म हो जाता है।

मैंने एक दिन सुन्दरदास की कहानी बताई थी। मैंने उससे यही कहा था, “तू साईकिल चलाना सीख ले धर्मराज से क्या कहेगा?” उसका अनुभव खुला हुआ था। उसने कहा, “मेरा धर्मराज से क्या मतलब। मैंने तो सावन शाह के पास जाना है। मैं डंके की चोट पर कहता हूँ कि मुझे सावन शाह लेने आएगा।”

प्यारेयो! यह सच्चाई है कि उसका गुरुदेव उसे लेने आया। यहाँ बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने यह सब देखा था। महात्मा कहते हैं, “जिसका अनुभव खुल जाता है उसका डर खत्म हो जाता है।”

**कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नींद बिहाइ।  
हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ॥**

किसी प्रेमी ने कबीर साहब के पास आकर सवाल किया कि इस संसार में कौन सुखी है? मूर्ख सुखी है या पढ़े-लिखे सुखी है? सन्त सुखी हैं या जो इस रास्ते पर नहीं आते वे सुखी है? कबीर साहब ने कहा, “इस संसार में दो किस्म के इंसान सुखी हैं। एक वे जिन्हें कोई समझ नहीं जो पशु की तरह रात को सोते और सुबह उठ जाते हैं उन्हें परमात्मा के बारे में कुछ भी पता नहीं। उसके सारे काम पशुओं की

तरह होते हैं। लोग हँसकर कहते हैं कि यह देखने में तो इंसान लगता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

*करतूत पशु की मानस जात लोक विचारा करे दिन रात।*

परमात्मा बनाने तो पशु लगा था लेकिन उसने दाढ़ी मूँछें लगा दी सींग और पूँछ नहीं लगाई लेकिन अक्ल पशुओं की तरह ही है कबीर साहब कहते हैं:

*पशु घड़ेन्दा नर घड़ा चूक गया सींग पूँछ।  
अक्ल वही हैवान की बिना सींग बिन पूँछ।*

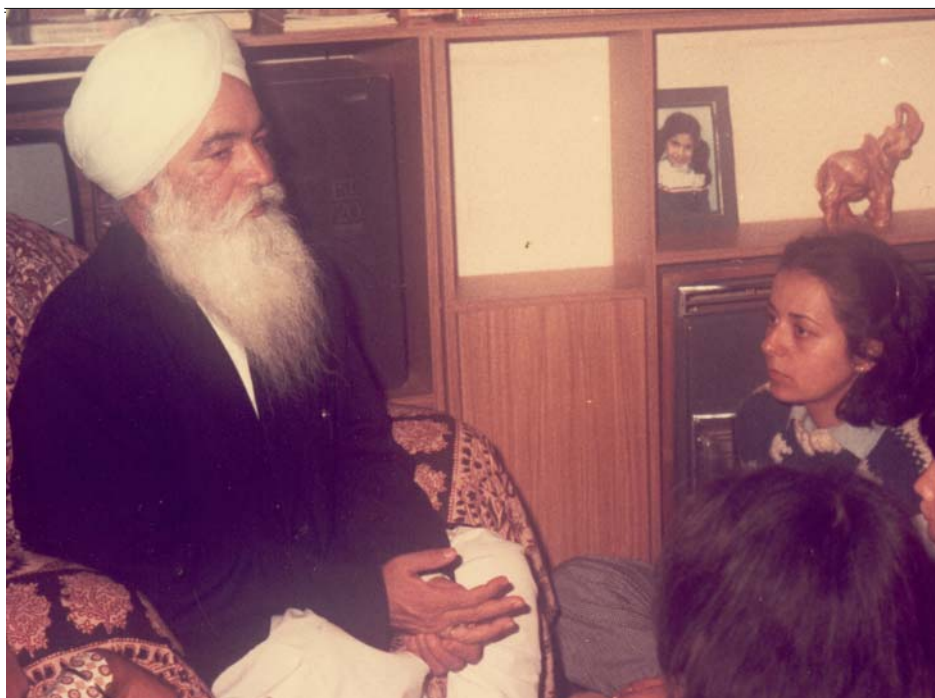
वे इंसान सुखी हैं जिनको कुछ फिक्र ही नहीं कि आगे काल क्या करेगा? या वे लोग सुखी हैं जो सोच-विचार करके परमात्मा में जाकर मिल जाते हैं।

कमाई करनी कोई आसान नहीं है। यह एक तरह की बला गले में डालने जैसी है। सुबह उठकर मन के साथ संघर्ष करना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं। बुराई करते समय गुरु का डर लगता है। ऐसे वाक्यात भी हो जाते हैं कि कई बार बुराई करते हुए गुरु कान से आकर पकड़ भी लेता है कि यह क्या कर रहा है?

मेरे पास एक प्रेमी का पत्र आया जिसमें उसने लिखा कि आप सन्त लोग ठीक नहीं करते। पहले तो आप लोगों को मीठी बातें बताते हैं और प्यार से अच्छा भोजन भी खिला देते हैं। सब विश्वास देकर फिर आप 'नाम' दे देते हैं। नाम देकर आप कहते हैं कि कमाई करें, पाप-ऐब छोड़ें; यही चीजें तो हमें तंग करती हैं।

मैंने उसे जवाब दिया, प्यारेया! जो कुछ तू कह रहा है ये सब तेरे मन की चालाकी है। तू भजन किया कर।

मैं बताया करता हूँ कि मैं बहुत विश्वास वाला था, मुझे भरोसा था कि गुरु तारेगा। बचपन से ही मेरे दिल में यह ख्याल था कि भक्ति में पूर्ण होना मेरा पहला फर्ज है। मैं छः साल का था जब मेरे दिल में प्यार



उठा कि वे कैसे आदमी थे जो जीवित महापुरुष के चरणों में जाकर बैठे फिर उन्हें छोड़कर चले गए।

मैं दुनीचन्द का इतिहास सुनता था कि वह मौत के डर से गुरु गोविंद सिंह जी को छोड़कर चला गया और अपने साथ दो-चार आदमियों को भी ले गया। घर जाते ही उसे साँप ने काटा और वह मर गया। मौत से डरता हुआ वह गुरु को छोड़कर आनन्दपुर से भागा आखिर मौत का ही शिकार हुआ।

मेरे दिल में यह ख्याल था कि जब गुरु मिल जाए तो इधर-उधर भटकने की क्या जरूरत है। परमात्मा इच्छा जरूर पूरी करता है। मेरे गुरु ने मुझे जो कहा मैंने वह किया लेकिन मन अड़ियल टूटू होता है यह कभी अड़ भी जाता है। आप जिस गुफा में गए थे यह मन एक बार वहाँ शेर बनकर खड़ा हो गया था कि अंदर नहीं जाने दूँगा।

मैंने दयालु कृपाल के आगे विनती की मेरी लाज रख। आप समय-समय पर पहुँचते रहे। आपने आँखों पर हाथ रखकर कहा, “देख बेटा!

ये बाहर नहीं खोलनी अंदर खोलनी है। यह हर जीव का काम नहीं।” जब मशक पूरी हुई तो आपने अपना बहुत सा काम मेरे सिर पर रख दिया; मैं काफी रोया चिल्लाया लेकिन मेरी किसी ने नहीं सुनी।

मैं अमेरिका गया वहाँ एक छोटे से बच्चे ने मुझसे सवाल किया, “आप गुरु बनकर कितने खुश हैं?” मैंने कहा कि मैं अपने दिल का हाल तुझे नहीं बता सकता। मैं बोलकर भी अपना दुख किसी को नहीं बता सकता। दुनिया का बोझ उठाना खालाजी का बाड़ा नहीं। यह गुरु ही है जो काम ले रहा है।

अगर मुझे यह ज्ञान होता कि गुरु मुझसे यह काम लेगा तो मैं सच कहता हूँ कि मैं इतना कठिन अभ्यास नहीं करता। परमात्मा ने जिस आदमी को हर तरह की सुख-सुविधा दी हो वह इंसान इस तरफ आ जाए क्या यह आश्चर्य की बात नहीं?

कबीर साहब कहते हैं कि गेद गुम्बद के ऊपर नहीं खड़ी होती; राजा होकर हरि की भक्ति करे यह बड़े आश्चर्य की बात है। प्यारेयो! वे सुखी हैं जो कुछ नहीं जानते। जो जानते हैं उनके गले में तो एक प्रकार की बला पड़ जाती है। आप कहते हैं:

*राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोए।  
जो सुख साधु संग है सो बैकुंठ न होए।*

आप मालिक के प्यारों की हिस्ट्री पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी ने ईंट-पत्थरों का बिछौना किया। आप अच्छे घर में पैदा हुए थे क्या अच्छे बिस्तरो पर नहीं सो सकते थे? जब आपकी माता ने पूछा, “बेटा! तू ऐसा क्यों करता है, क्या नाम जपना कठिन है?” आपने रोकर कहा:

*आखन ओखा सुनण ओखा।*

नाम कहना, नाम को प्राप्त करना और नाम का प्रचार करना भी कठिन है। महात्मा कहते हैं कि यह तो दिन-रात का रोना ही पल्ले पड़ा होता है लेकिन इस रोने में संसार का सुधार होता है। परमात्मा

महात्मा को अपना प्यारा पुत्र समझकर संसार में भेजता है। जब गुरु गोविंद सिंह जी को इस संसार में भेजने लगे तब उन्होंने कहा, “मेरा दिल इस संसार में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं परम-पिता परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका।”

परमात्मा ने गुरु गोविंद सिंह जी से कहा, “मैं तुझे अपना बेटा समझकर संसार में भेज रहा हूँ मैं हर तरह से तेरी मदद करूँगा।” इसमें कोई शक नहीं कि शब्द-रूप परमात्मा वाक्य ही पर्दे के पीछे मदद करता है। जिसे अमृत पीने को मिले वह हथेली पर रखकर मोहरें नहीं खाता। जिसे स्वर्ग की सैर करने को मिले वह कल्लरों में मिट्टी नहीं उड़ाता।

जब ज्योत में ज्योत मिल जाए या जिसका एक बार प्यारे से मिलाप हो जाए वह बिछोड़े को गले नहीं लगाता। ऐसी हस्तियां परमात्मा की तरफ से बनी बनाई आती हैं; वक्त आने पर प्रकट हो जाती हैं।

मैं बैंगलोर गया वहाँ कुछ आदमियों ने मुझसे सवाल किया क्या बाबा सोमनाथ पूरे गुरु थे? मैंने कहा, “मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता, यह आपका मामला है। आप अंदर जाकर देखें वह पूरे थे या अधूरे थे? मैं बाबा सोमनाथ से मिला था, मेरा उनके साथ प्यार था। मैं तो यही कहूँगा कि पश्चिम की आत्माओं की संभाल के लिए शब्द-गुरु ने मेरी ड्यूटी लगाई है।”

बाबा सोमनाथ से प्यार करने वाली जो भी आत्माएं शरण में आएंगी वे जरूर फायदा उठाएंगी। मैं कन्नड़ भाषा नहीं जानता। रामसिंह प्रेमियों को मेरे साथ मिलवा रहा था। उन प्रेमियों के अंदर इतना प्यार था कि वे आते ही मेरे पैरों में लेट गए। मैं माथा टिकवाने का शौकीन नहीं, मुझे बहुत बुरा महसूस हुआ। मैंने उनसे कहा, “मैं यहाँ आपकी आत्मा के लिए आया हूँ; मैं आपके प्यार की कद्र करता हूँ आप लोग इस तरह मेरे पैरों में मत लेटें?”

रामसिंह ने कहा कि ये लोग आपका धन्यवाद करने के लिए आए हैं। एक-एक आदमी ने इक़बाल किया कि जब आप सतसंग करते हैं तो हमें बाबा सोमनाथ दिखाई देते हैं। हम सोमनाथ समझकर ही आपके पीछे लगे हुए हैं।

अगर बाबा सोमनाथ वहाँ बूटे न लगाते तो ये आत्माएं कहाँ जाती? एक महात्मा बूटे लगा जाता है तो दूसरा आकर पानी दे देता है। एक महात्मा 'नाम' दे देता है और दूसरा महात्मा उन्हें सतसंग सुनाकर उनसे अभ्यास करवा लेता है।

पश्चिम से एक आदमी मेरे पास आया। वह पहले उस जगह से होकर आया था जहाँ बहुत मजबूत पार्टियाँ हैं। उसने मुझसे कहा कि मैं वहाँ गया था उनमें मुझे महाराज कृपाल दिखाई दिए लेकिन आपमें महाराज कृपाल दिखाई नहीं देते। मैंने हँसकर कहा, “यह तो अपने-अपने बर्तन का सवाल है। मुझे तो तुझमें, यहाँ जो आस-पास खड़े हैं और यहाँ के पेड़ों में भी महाराज कृपाल दिखाई देते हैं। जहाँ उसे ऐसी बातें दिखाई गई थी वह वहाँ वापिस नहीं गया हमेशा यहाँ पर ही आता है और कहता है कि मुझे सच्चाई का ज्ञान अभी हुआ है।”

पश्चिम से कुछ आदमी किसी महात्मा से 'नाम' लेने के लिए आए। उन्होंने महात्मा से कुछ सवाल पूछे कि क्या आप अपनी अथोरिटी अपनी ताकत पर नाम देते हैं? उस महात्मा ने इक़बाल किया, “हाँ! हम अपनी ताकत पर 'नाम' देते हैं।”

वैसे तो राजस्थान में कोई नहीं आता लेकिन सच्चाई की खोज के लिए हर एक को आना पड़ता है। वही आदमी मेरे पास भी आए और उन्होंने वही सवाल मुझसे भी किया कि आप अपनी अथोरिटी अपनी ताकत पर 'नाम' देते हैं? मैंने कहा प्यारेयो! मैं तो शरीर भी अपना नहीं समझता, मुझमें कौन सी ताकत है जो मैं जीवों को 'नाम' देकर पार कर दूँगा। मैं गुरु की ताकत पर जीवों को नाम देता हूँ। गुरु की ताकत ही मेरे शरीर को चला रही है। वह जैसे बुलवाता है मैं बोलता हूँ।

मैं किसी को अपने साथ नहीं जोड़ता, मैं शब्द सावन-कृपाल के साथ जोड़ता हूँ। उन आदमियों ने यह सब कुछ किताबों में छपवाया और पश्चिम में जाकर सब कुछ ब्यान किया। जब मैं बाहर गया तो लोग भमक्कड़ो की तरह मेरे पास इकट्ठे हो गए।

कबीर साहब कहते हैं कि इस रास्ते पर जो भी कामयाब हुए हैं उन्होंने रातें जागी होती हैं, मेहनत की होती है। इस मैदान से साफ निकल जाना, नाम की कमाई करना कोई मामूली बात नहीं। प्यारेयो! आशिकों की नींद सूली पर होती है वे अपनी मशक पूरी करने के बाद भी नहीं सोते। हमने समझा-बूझा है कि जब वह प्रकट हो जाता है तो वह न खुद सोता है और न सोने ही देता है। परमात्मा की दया से उन्होंने यह बला अपने गले में डाली होती है।

**कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर।  
लागी चोट मरम की रहिओ कबीरा ठउर।।  
कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उदास।  
चोट सहारै सबद की तासु गुरु मैं दास।।**

कबीर साहब कहते हैं अगर किसी को एक बार सेला लग जाए तो वह फिर भी साँस लेता है और खत्म हो जाता है लेकिन 'शब्द' की चोट सहनी बड़ी मुश्किल है। अगर कोई यह कहे कि 'शब्द' की चोट सहकर दुनिया में वैसा ही सब कुछ कर लूँगा तो वह मेरा गुरु है और मैं उसका दास हूँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, “जिन्हें प्रेम का तमाचा लग जाता है वे घर के कारोबार की तरफ से चले जाते हैं। वे गुरु के ही हो जाते हैं।” गुरु नानक देव जी अपनी बानी में लिखते हैं :

**गुरु गुरु गुर कर मन मोर गुरु बिना मैं नाहीं होर।**

अपने आपको छोड़कर गुरु को गाना मामूली बात नहीं। जिन्हें प्रेम-विरह की चोट लग जाती है उनकी यह हालत हो जाती है।

**कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ।  
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥**

मुल्ला मुनारे पर चढ़कर बाँग दे रहा था। उसके बाँग देने का यही मतलब होता है कि नमाज़ का समय हो गया है। आजकल तो मुनारे पर चढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि स्पीकर के साधन हो गए हैं। आजकल पंडित लोग शहरों और गाँवों में गीता बिस्तर पर ही पहुँचा देते हैं। सिक्ख लोग कोई सुने या न सुने जपजी साहब सोते हुए के पास पहुँचा देते हैं। हम पढ़ने वाले और सुनने वाले भी खुशक होते हैं। हमारी अपनी तो श्रद्धा नहीं होती हम दूसरे की श्रद्धा भी खत्म कर देते हैं।

पहले समय में मैं देखा करता था कि लोग सुबह उठकर पहले गीता या जपजी साहब पढ़ते थे काम बाद में करते थे लेकिन आज मशीनी युग में हम नाम भी मशीनों से जपना चाहते हैं।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं हे मुल्ला! तू इतनी जोर-जोर से क्यों बाँग दे रहा है? परमात्मा तो तेरे अंदर है वह बहरा नहीं। समझाना तो हमने अपने मन को है।

**सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबै जाइ ।  
कबीर जा की दिल साबति नहीं ताकउ कहां खुदाइ ॥**

मुसलमानों में शेख, सईद और मुगल कई फिरके हैं। इसी तरह हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र फिरके हैं, इनमें ब्राह्मण उत्तम माने जाते हैं। उसी तरह मुसलमानों में शेख उत्तम माने जाते हैं। जैसे ब्राह्मणों को चढ़ावा चढ़ाते हैं उसी तरह शेखों को भी आदर देते हैं, चढ़ावा चढ़ाते हैं।

जिसके दिल में दुनिया भरी पड़ी है उसे सब कहाँ? वह हज जाकर भी क्या करेगा? उसके दिल में खुदा कैसे प्रकट होगा? परमात्मा मनमुखों को जितना मर्जी दे दे वे फिर भी भूखे ही रहते हैं।



परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

## प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

प्रेम एक अटल निशान है जो मुसीबतों के तुफान आने पर भी नहीं टलता। ऐसा प्रेम दुनिया की गुमराह जिंदगी के लिए हिदायत का नमूना होता है इसकी कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती। चाहे इसकी ऊँचाई लोगों की नजर में चुभती है! प्रेमी की जान मछली की तरह मालिक के अथाह समुद्र में उछालें मारती है।

*तू दरियाओ दाना बीना में मछली कैसे अंत लहां।*

मछली पानी के बिना नहीं रह सकती अगर सब्र का घूट भर भी ले तो जिंदा नहीं रहती। प्रेमी के अंदर मालिक का ईशक होता है जो सिर से लेकर पैर तक उसकी रग-रग में समाया होता है; वह उसकी मौहब्बत में गर्क हुआ होता है। प्रेमी का ईशक मालिक की जाति के कारण होता है और सब गरजों की मैलों से रहित होता है।

### प्रेम की शराब

हाफिज साहब प्रेम की मस्ती को बयान करते हैं, “हे सतगुरु! मुझे अपने दीवानों के दायरे में ला क्योंकि बाहरी होशियारी से यह मस्ती बहुत अच्छी है। इस दीवानगी पर हजारों अक्लमंदों की जानें कुर्बान हैं अगर अक्ल को यह पता लग जाए कि दिल को उस महबूब की दीवानगी में कितनी खुशी नसीब होती है तो अक्लमंद लोग मौहब्बत की जंजीरो के पीछे पागल हो जाएं!”

अगर बाहरी प्रेम की मस्ती की तरफ मुँह करें! यह फकीरों को कारु बादशाह बना देती है। यह भिखारी से बादशाह बनने का नादर नुस्खा है। जिस शराबखाने से यह मस्ती मिल सकती है उसमें कदम रखना उन लोगों का ही काम है जो एक रंग हों। जिनका दिल दिमाग

और जुबान एक हों, ये सभी प्रीतम के रंग में रंगे हों। खुदगर्ज और दुनिया के कुत्तों का प्रेम की शराब बेचने वाली गली से गुजरना मुश्किल है। इस शराब को बाहरी शराब से मुराद नहीं। यह वह शराब है जिसे मालिक ने तजवीज किया है। यह कोई बनावटी शराब नहीं, यह दुनिया में आदि से चली आ रही है। प्रेम ऐसी चीज नहीं जो जुबान पर आ सके।

शम्स तबरेज साहब इस शराब का वर्णन करते हुए कहते हैं, “ऐ मुर्शिद! तू जल्दी यह शराब बख्श दे, ज्यादा कहने और सुनने को जाने दे। यह शराब हक की और रब वाली है। हे साकी! हक की शराब ले आ और रब वाली शराब अपने हिजर में कबाब हुए दिलों को दे।”

### प्रेम की शराब का नशा

बाहर के नशे सच्चे प्रेम के एक घूँट का भी मुकाबला नहीं कर सकते। यह जान और रूह की शराब है। इस शराब का जमीनी शराब के साथ क्या मुकाबला हो सकता है? हाफिज साहब फरमाते हैं कि मिजाजी शराब के दो हजार मटके सतगुरु के प्रेम के प्याले के एक घूँट का भी मुकाबला नहीं कर सकते।

जब गुरु नानक साहब को बाबर बादशाह ने भंग पेश की तो आपने फरमाया, “इस मद का नशा सुबह करने से शाम को उतर जाता है और शाम को करने से सुबह उतर जाता है लेकिन मालिक के नाम का नशा दिन-रात चढ़ा रहता है, वह कभी नहीं उतरता।”

*भो की भांग सिफत का कूंडा ज्ञान का किया डंडा।  
सच शब्द अमृत मत पिया तब हुआ अमल अखंडा।  
बाबर कलंदर प्याला पियो उतर जावे कबहूँ खियो।*

### भाई बाले की जन्मसाखी

शम्स तबरेज साहब फरमाते हैं कि हमारे अंदर इतना प्रेम है अगर मैं जोश में आकर मस्ताने की तरह नारा लगाऊं तो दीन और दुनिया दोनों आलम मस्त हो जाएं। मेरे अंदर प्रेम की इतनी मस्ती है

अगर मेरे जिस्म की मिट्टी बनाकर जमीन में डाल दी जाए तो जब उस जमीन में से गेहूँ उगे उस गेहूँ से रोटी पकाने वाला रोटी खाने से पहले ही मस्त हो जाए! जिस तंदूर पर वह रोटी पके वह मस्तानगी का घर बन जाए! उस रोटी को बरताने वाले तक दिवाने बन जाए!

### प्रेम की शराब कहाँ मिलती है ?

प्रेम की शराब कहीं मटको में जोश नहीं मारती यह तो प्रेमियों के हृदयों में उबाले मारती है। जो लोग प्रेम से अंजान हैं वे सदा बाहरी साधनों की उलझनों में हैरान परेशान रहते हैं और उनकी रूह रूहानी रसाईयों से खाली रह जाती है।

### प्रेम को पाने का क्या कानून है ?

जिस तरह और इल्मों को प्राप्त करने के कायदे-कानून होते हैं उसी तरह प्रेम के भी खास कानून हैं जिन पर चलना जरूरी है। प्रेम करने वालों को दीन-दुनिया की फिक्र छोड़कर हरदम प्रीतम के ध्यान में मग्न रहना पड़ता है।

### गुरु का प्रेम और उसका फल

मालिक को हमने नहीं देखा उसके साथ मौहब्बत होना असंभव है। मुर्शिद मालिक की मौहब्बत का जहूर है, उसके साथ मौहब्बत करना मालिक के साथ मौहब्बत करना है। मुर्शिद की मौहब्बत का दम भरना आसान है लेकिन सचमुच उसका आशिक बनना बहुत कठिन है। मुरीद के दिल में ज्यों ज्यों मुर्शिद की मौहब्बत तरक्की करती जाती है त्यों त्यों मुर्शिद का ध्यान अपने आप कायम होता जाता है।

मुरीद मुर्शिद के प्रेम की आग में परवाने की तरह जलता रहता है इस जलन में सदा का जीवन है जिसे पाने के लिए वह अपने आपको फनाह करता है। ऐसे प्रेमी मुर्शिद के प्रेम में फनाह होकर अमर जीवन का शर्बत पीते हैं और उसका रस लेते हैं। हम जिन महात्माओं से मौहब्बत करते हैं वे खुद मालिक की मौहब्बत में फनाह हैं। उनके

दर्शन करने मालिक के दर्शन करने हैं। ईसा मसीह जी ने फरमाया है कि जिसने मुझे देखा है उसने मेरे पिता खुदा को भी देखा है।

खुदा ने हजरत ईसा से कहा, “मैं बीमार था तू मेरी देखभाल करने के लिए नहीं आया?” हजरत ईसा ने अरज किया, “हे रब्बा! तू जमीन और आसमान का मालिक और बादशाह है, तू किस तरह बीमार हो सकता है?” खुदा ने कहा, “मेरा वह बंदा बीमार था अगर तूने उसकी देखभाल की होती तो वह मेरी ही देखभाल थी।” इससे जाहिर है कि खुदा के बंदो से मौहब्बत करना और उनकी सेवा करना ही खुदा की मौहब्बत और सेवा करना है।

मुर्शिद की सेवा, मौहब्बत और उसके ईशक का तस्सवुर हकीकत में खुदा का ईशक और तस्सवुर ही है। बेसमझ लोग इसे मुर्शिद परस्ती या गुरुडम कहते हैं। गुरुबानी में भी यही फरमाया है:

*सतगुरु दयो प्रतख हर मूर्त जो अमृत वचन सुनावे।  
नानक भाग भले तिस जन के जो हरि चरणी चित्त लावे।*

दिल में राह बनाने के लिए हृद दर्जे की मौहब्बत की जरूरत है। जब मौहब्बत और प्रेम का सिलसिला कायम हो जाए तो कुदरती तौर पर तस्सवर लाजमी हो जाता है क्योंकि प्रेमियों के दिल में हर समय प्रीतम की तस्वीर रहती है।

हदीश में आया है कि मोमिन खुदा का शीशा है, मोमिन में खुदा की झलक दिखाई देती है। ऐसे पुरुषों को देखने से परमात्मा याद आता है। ऐसे लोगों की पहचान यह है कि उनकी संगत में जाने से खुदा की याद आती है। कबीर साहब जी फरमाते हैं:

*कबीर दर्शन साध के साहब आवे याद।  
लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।*

ऐसे लोगों की सोहबत में न जाएं जो मौहब्बत से खाली है क्योंकि उनमें आपको अपनी शक्त और ख्यालों का अक्ष नजर आएगा।

जब मुरीद प्रेम के दर्जे को पा जाता है तो उसके दिल में मुर्शिद के लिए राह बन जाती है। यह गति मुर्शिद की प्यार भरी याद और ध्यान करने से पैदा होती है। सूने हृदय प्रेम के कमाल पर नहीं पहुँचते। रब के आशिक अपने मुर्शिद की सूरत का ख्याल करते हैं वे मुर्शिद के ख्याल की बरकत के कारण जाहरी और अंतरी लाभ उठाते हैं।

सतगुरु मालिक का आशिक है उसके अंदर मालिक का अथाह प्रेम ठाठें मारता है। उसके साथ प्यार होना मालिक को पाने का जरिया है क्योंकि वह मालिक के प्यार का नमूना है। मालिक प्यार भरा दिल रखता है। सतगुरु को देखकर मालिक से मिलने का शौक बढ़ता है। ऐसी हस्ती के साथ मौहब्बत का होना ईशक इलाही का सबब होता है क्योंकि उसे देखकर बेख्तियार मालिक की याद आती है।

मौलाना रुम साहब फरमाते हैं, “जब तूने पीर की जाति को कबूल कर लिया तो खुदा और रसूल दोनों ही उसकी जाति में आ गए अगर तू मुर्शिद को अलग से देखता है तो तू असल और उसकी भूमिका को गुम कर लेगा अगर तू हक की जाति को ढूढ़ता है तो मुर्शिद के रोशन माथे को देखकर उसका आशिक हो जा।”

मालिक जिस हृदय के अंदर मुर्शिद की मौहब्बत बरख्शे वह ऊँचे भाग्य वाला है। मुर्शिद ही मालिक से मिलने का जरिया है। मुर्शिद के साथ उसकी जाति की खातिर प्रेम होना दूसरे किस्म के प्रेम से हजारों दर्जे अच्छा है क्योंकि उसके अंदर का हुस्न कभी नाश होने वाला नहीं इसलिए ऐसे प्रेम को कभी नफा या नुकसान नहीं।

मालिक का हुस्न सदा अटल है यह गुरु के अंदर झलकें देता है। प्रेम के लिए सच्ची तड़प का होना जरूरी है; जब तक इंसान विषय भोगों में फँसा रहता है सच्ची तड़प पैदा नहीं हो सकती। यह जरूरी है कि हम कुसंगत से दूर रहें और भोग के फरेबों से बचें। रुह ऊँचे अरशों से आई है यह जमीनी भोगों से बंधना नहीं चाहती।

.....शेष अगले अंक में



## धन्य अजायब



गुरु प्यारी साधा संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 15, 16 व 17 मई 2009 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे दिए गए पते पर पहुँचकर लाभ उठाएं।

**कम्युनिटी हाल, बेहरा इन्कलेव,  
पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)  
नई दिल्ली - 110 087**

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

98101-94555

98107-94597

98182-01999

98102-12138

राकेश कालिया

सोनू सरदाना

सुरेश चोपड़ा

राकेश शर्मा